"अर्थशास्त्र शिक्षण"

प्रथम अध्याय

अर्थशास्त्र का अर्थ :—

मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य द्वारा की जाने वाली क्रियाएँ भी असंख्य है। मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं में से कुछ अनिवार्य है, कुछ आरामदायक है तो कुछ विलासितापूर्ण है। मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शारीरिक क्रियाएँ करता है। मनुष्य की आवश्यकाएँ भौतिक के अलावा मानसिक, आध्यात्मिक और नैतिक भी होती है। वह अपनी मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बौद्धिक क्रियाएँ करता है तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नैतिक एवं धार्मिक क्रियाएँ करता है। मनुष्य अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिन क्रियाओं को करता है। अर्थशास्त्र में मनुष्य की उन्ही आर्थिक क्रियाओं एवं प्रयत्नों का अध्ययन किया जाता है इस प्रकार अर्थशास्त्र के अर्थ को स्पष्ट करते हुये हम कह सकते है कि

"अर्थशास्त्र मनुष्य की उन क्रियाओं का अध्ययन है जिनका सम्बन्ध धन कमाने तथा अर्जित धन को आवश्यकताओं की पूर्ति पर व्यय करने से है।"

सामान्य रूप में अर्थशास्त्र की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा दे पाना कठिन है क्यो कि विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा समय-समय पर अपनी सोच एवं विचार के अनुसार अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ देते रहे है। अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाओं को सुविधा की दृष्टि से दो मुख्य भागों में बाटा जा सकता है :—

अर्थशास्त्र की परिभाषा :—

अर्थशास्त्र की परिभाषा को अध्ययन की दृष्टि से सर्व प्रथम हम प्राचीन परिभाषाओ का अध्ययन करते है क्योकि अर्थशास्त्र को एक विषय के रूप में मानते हुये 'धन' केन्द्रित परिभाषा प्रदान :—

प्राचीन परिभाषा :—

प्राचीन अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को 'धन का विज्ञान' कह कर परिभाषित किया है। सर्व प्रथम एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार से दी है :—

"अर्थशास्त्र राष्ट्रों के धन के स्वरूप तथा कारणों की खोज करने वाला शास्त्र है।"

"एडम स्मिथ"

जे० बी० से के अनुसार :— J. B. Say

"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो धन का अध्ययन करता है।"

वाकर के अनुसार :—

"राज्य अर्थ-व्यवस्था या अर्थशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जो धन से सम्बन्धित है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने से अर्थशास्त्र को धन का शास्त्र कहा जा सकता है। इन परिभाषाओं में निम्न बातें सामान्य रूप में देखी जा सकती हैं :—

1- अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है।
2- अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री धन है। इसमें मनुष्य का स्थान गौण है।
3- अर्थशास्त्र में धन का अध्ययन राज्य के सम्बन्ध में किया जाता है।
4- इसमें एक ऐसे 'आर्थिक मानव' की कल्पना की जाती है जो स्वहित से प्रेरित होकर आर्थिक क्रियाएँ करता है।

प्राचीन परिभाषाओं की आलोचना :—

धन सम्बन्धी प्राचीन परिभाषाओं की आगे चल कर रस्किन, बर्क, डिकिन्स और मौरिस आदि अनेक अर्थशास्त्रियों ने कटु आलोचना की गयी जो निम्न प्रकार से थी

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

1- इन सभी परिभाषाओं मे धन को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया गया।
2- इन परिभाषाओं में धन को साध्य मान लिया गया और मनुष्य को गौण रखा गया।
3- धन का ~~अर्थ~~ प्रयोग संकुचित अर्थ में किया गया है।
4- इन परिभाषाओं ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को बहुत सीमित कर दिया है।
5- आर्थिक मानव' की कल्पना करना वास्तविकता से परे है क्यों कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है और उसमें संवेदना होती है।

इस परिभाषाओं की आलोचना का ही परिणाम हुआ कि अर्थशास्त्र को कुछ अलग परिभाषाओं का जन्म हुआ।

अर्थशास्त्र की आधुनिक परिभाषाएं :—

अर्थशास्त्र की आधुनिक परिभाषाओं को जिन्हें अनेक अर्थशास्त्रियों द्वारा दिया गया अध्ययन की दृष्टि से सरल बनानेके लिए निम्न वर्गो मे विभाजित किया गया है :—

1- कल्याण - केन्द्रित परिभाषाएँ :—
2- दुर्लभता या सीमित साधन केन्द्रित परिभाषाएँ-
3- आवश्यकताविहीनता केन्द्रित परिभाषाएं :-
4- विकास - केन्द्रित परिभाषाएँ :—

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

इन सभी वर्गो की परिभाषाओं को हम अलग-अलग विवेचना या अध्ययन हम निम्न प्रकार से करते है :-

1- कल्याण - केन्द्रित परिभाषाएँ :—

धन सम्बन्धी परिभाषाओं की आलोचना के बाद अर्थशास्त्रियों के दृष्टिकोणों मे परिवर्तन आया और उन्होने धन की अपेक्षा मानव कल्याण को अधिक महत्व देना प्रारम्भ कर दिया और उन्होने माना की अर्थशास्त्र